Peer Reviewed Refereed Journal ISSN : 2278 – 5639
Global Online Electronic International Interdisciplinary Research Journal (GOEIIRJ)
{Bi-Monthly} Volume – X Issue – VI November - December 2021

प्रमुख समाज सुधारकों का राष्ट्रीय एकता में योगदान

प्रा. डॉ. नंदादेवी बोरसे
हिंदी विभागप्रमुख
क्रां. व्ही.एन.नाईक महाविद्यालय, नाशिक

भारतीय संस्कृति का मूलभूत ढाँचा पाँच सोपानों से गुजरता हुआ प्रतीत होता है | हाँलांकि हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य साहित्यकार रामधारी सिंह दिनकर जी ने भारत संस्कृति का प्रवाह चार सोपानों के मध्य से प्रवाहित होता हुआ माना है | भारतीय संस्कृति की प्रथम स्थिति आर्यों के आगमन से पूर्व की मानी जाती है | परंतु खेद इस बात का है कि प्रमाण के अभाव में उसे शून्य घोषित कर दिया जाता है |

Golbal Oline Electronic International Reserch Journal's licensed Based on a work at *http://www.goeiirj.com*

भारतीय संस्कृति का प्रथम सोपान आर्यों के आगमन से पूर्व का है | द्वितीय सोपान तब हुआ जब आर्यों का भारतवर्ष में आगमन हुआ | आर्यों और आर्यों से पूर्व आर्येतर जातियों के मिश्रण से जिस संस्कृति की निर्मिति हुई वही संस्कृति भारतीय संस्कृति की बुनियादी संस्कृति बनी | भारतीय संस्कृति का तृतीय सोपान तब हुआ जब महावीर स्वामी तथा गौतम बुद्ध ने इस स्थापित हो चुकी संस्कृति या धर्म के विरुद्ध विद्रोह करके उपनिषद आधारित चिंतन धारा को हठात खींचकर अपनी मनोवांछित दिशा की ओर घसीट ले गये |

चतुर्थ सोपान का आगमन उस समय हुआ जब इस्लाम विजेताओं के धर्म के रूप भारतवर्ष में पहुँचा | हमारे देश भारतवर्ष में यह इस्लाम धर्म हिन्दुत्व के साथ संघर्षरत हो गया | पाँचवा सोपान हमारी संस्कृति पर तब हावी हुआ जब यूरोप महाद्वीप से इंग्लैंड देश के निवासी अंग्रेज़ आये | अंग्रेजों के आगमन से उनके संपर्क में हिन्दू एवं मुस्लिम दोनों संस्कृतियों ने नव – जीवन का अनुभव किया |

मुसलमानों के व्यवहार और आचरण से तंग आकर हिन्दुओं ने उन्हें म्लेच्छ तथा काफिर कहना प्रारम्भ कर दिया |हमारे देश भारतवर्ष में धार्मिक विद्वेष की भावना नहीं थी, यह प्रथा मुसलमानों की देंन थी | उन्होंने जाति प्रथा का जहर बोकर भारतीय समाज को टुकड़ों – टुकड़ों में विभक्त कर दिया और यहाँ के शासक बन बैठे | इसी संदर्भ में कथन है कि – " धार्मिक द्वेष भारत में नहीं था | यह चीज यहीं मुस्लिम साम्प्रदायिकता की देन है |"1

कुछ कालखंड के उपरान्त भारतीय संस्कृति के 'विशेष गुण' अपने मैं आगन्तुक को मिलाने की वृत्ति के कारण हिन्दू और मुसलमान (सूफी) आपस में मिलकर मुसलमानों की गलत नीतियों का विरोध करने लगे | आगे जाकर औरंगजेब ने ईरान के सूफी संत मंसूर को सूली पर चढ़ा दिया | सूफियों के समुदाय मैं ही फकीर (कलंदर) थे जो निराकारी थे | " सूफियों और कलंदरों के प्रभाव से भारत में इस्लाम का रुप बदल गया |" 2

पृथ्वीराज चौहान जो भारतवर्ष का अन्तिम हिन्दू सम्राट था | सन ११११२ ई. में पृथ्वीराज की पराजय ने भारतवर्ष से हिन्दू राज्य की सत्ता को खो दिया | समय के अंतराल में अमीर खुसरो का जन्म हुआ | अमीर खुसरो

हिंदुस्तान के राष्ट्रवादी मुसलमानों के अग्रणी पुरुष थे | जिसने हिन्दू – मुस्लिम एकता में अपना अमूल्य योगदान दिया था |

कुछ समुदाय वैदिक धर्म के जटिल अनुष्ठानों से अपने को तंग महसूस कर रहे थे | ऐसे समय में एक धर्म निरपेक्ष निरंकारी महात्मा कबीर का जन्म हुआ | कबीरने हिन्दू और मुस्लिम दोनों धर्मो की जमकर आलोचना की | कबीर के राम जन – जन के हृदय में बसे है यथा –

" हिन्दू क़हत है राम हमारा, मुसलमान रहमाना |
आपस मैं दोऊ लड़े मरत हैं, भेद न कोई जाना ||
जो खुदाय मसजीद बसतु है और मुलुक केहि केरा |
तीरथ – मूरत रामनिवासी, बाहिर केहि का ड़ेरा ||"3

हिन्दू – मुस्लिम जनता के संदर्भ में दादूदयाल का कथन इसप्रकार है -

" दोनों भाई हाथ – पग,दोनों भाई कान |
दोनों भाई नैन है, हिन्दू – मुसलमान ||"

जो सर्वश्रेष्ठ ग्रंथ 'पद्मावत' के रचयिता जायसी ने प्रेम – पीड़ा की उत्कृष्ट व्याख्या प्रस्तुत की है | इस प्रेम – पीड़ा का उद्देश्य भी हिन्दू – मुस्लिम प्रेम ही है |

अमीर खुसरो, जायसी, बीरबल, रसखान, आलम तथा रहीम आदि ने सांप्रदायिक एकता की मिसाल अपने साहित्य द्वारा प्रदान ही है | सम्राट अकबर और शाहजहाँ के शासन काल में मुसलमानों का वर्चस्व काफी कम हो चुका था तथा मुस्लिम शासक भी उदार प्रवृत्ति के मार्ग पर अंशत: अनुसरण करने लगे थे |हमारे सर्वश्रेष्ठ कृष्ण भक्ति का पदार्पण करनेवाले सूरदासजी का नाम विश्व प्रसिद्ध है | गोस्वामी तुलसीदासने श्रीरामचरितमानस का अवधी भाषा में अनुवाद करके तो मानों इस सम्पूर्ण धरा के मानव समुदाय में प्रेम का बीजारोपण करके चार चाँद ही लगा दिये है |

"जौ अनीति कहु भाषौ भाई | तौ मोहि बरजहु भय बिसराई ||
बैर न बिग्रह आस न लासा | सुखमय ताहि सदा सब आसा ||
प्रीति सदा सज्जन संसर्गा | तृन सं विषय स्वर्ग अपबर्गा ||" 4

मध्यकाल में हमारे भक्त कवियों ने भी हिन्दू – मुस्लिम एकता की स्थापना में सक्रिय योगदान दिया है | भक्ति आंदोलन का आरंभ आलवारों के काव्य में बहुत पहले ही हो चुका था | शंकराचार्य जी ने हिन्दू धर्म की पुनर्जागरण में अपना अमूल्य योगदान प्रदान किया है | शंकर का एकेश्वरवाद भारतीय अद्वैतवाद का विकसित रुप है | ईश्वर ने सृष्टि का निर्माण करके भक्तों के हृदय में प्रेम तथा दुष्टों के हृदय में घृणा का स्थान दिया है | यह संसार असत्य है | इसी आधारपर रवीन्द्रनाथ ने भी राष्ट्रीय एकता में योगदान दिया है |उनकी प्रवृत्तियाँ व्यापक थी और प्राय: वे सभी लोकोपकारी थी | यथा –

" भारतीय जागरण के अग्रदूत तुम प्रकृति के आँगन में बाल रवि के समान उदित हुए | तुम्हारी प्रखर किरणों ने भारत के जड़ीभूत अंधकार को विदीर्ण कर दिया | ज्यों – ज्यों तुम अपना स्वर ऊंचा करते गए हमारे रुढ़िग्रस्त

बन्धन शिथिल होते गये | हमारे जागरण का इतिहास तुम्हारे ही विकास का तो इतिहास है |"5 उक्त शब्द रामधारीसिंह दिनकर द्वारा रवीन्द्रनाथ टैगोर के प्रति व्यक्त किये गये है |

राजाराम मोहन राय धर्म के कम सुधारक थे, बल्कि वे समाज के सुधारक अधिक थे | भारत की राजनीतिक राष्ट्रीयता इसी सांस्कृतिक राष्ट्रीयता का विकसित रुप है | राजाराम मोहन राय ने सती प्रथा का विरोध करके भारतीय जनमानस में जागरण का संदेश दिया | मिस कालेट ने राजाराम मोहन राय के संदर्भ में इसप्रकार लिखा है – " इतिहास में राजाराम मोहन का स्थान उस महासेतु के समान है जिस पर चढ़कर भारतवर्ष अपने अथाह अतीत से अज्ञात भविष्य में प्रवेश करता है |"6

महादेव गोविंद रानडे तथा बाल गंगाधर तिलक ने भी हिन्दू – मुस्लिम एकता अर्थात राष्ट्रीय एकता में भगीरथ प्रयत्न किए है | स्वामी दयानन्द सरस्वती ने हिन्दू धर्म की डूबती नैया को बचाने में अपनी सम्पूर्ण शांति लगा दी | महाराणा प्रताप, वीर शिवाजी तथा गुरु गोविंद सिंह के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है | इसके अतिरिक्त नेताजी सुभाषचंद्र बोस, स्वामी विवेकानंद, श्रीमती एनी बेसेंट के कार्य ऐसे है जिनका समस्त विश्व अनुकरण करता है | श्रीमती एनी बेसेन्ट का कथन है कि - " हिन्दुत्व ही वह मिट्टी है, जिसमें भारतवर्ष का मूल गड़ा हुआ है | यदि यह मिट्टी हटा ली गयी तो भारतरूपी वृक्ष सूख जायेगा |"7 कहने का अर्थ यह है कि एक विदेश कि धरती से आया महा`मानव रुपी व्यक्ति भारत माँ का कितना अटूट पुजारी बन गया इसका अंदाजा लगा पाना कठिन है |

महायोगी अरविन्द ने सम्पूर्ण संसार को एक घर की संज्ञा प्रदान की है | आपके योग दर्शन ने सम्पूर्ण मानवता को अपने में समाहित कर लिया है | महात्मा गांधीजी ने अहिंसा परमो धर्म: का सिद्धांत प्रतिपादित किया है | इसके अतिरिक्त विश्व दर्शन के प्रवर्तक सर्वपल्ली राधाकृष्णन का दर्शन मनुष्य की समकालीन आवश्यकता से जन्म लेता है | रहस्यवाद के माध्यम से आध्यात्मिक धर्म को प्रतिपादित करने का श्रेय राधाकृष्णन को ही जाता है |

राष्ट्रीय एकता (हिन्दू – मुस्लिम) अथवा सर्व विश्व सर्व मानव एकता ही सच्ची मानवता है | यथा -

" हे थाय आर्य हेथाय अनार्य हेथाय द्रविड़ – चीन |
शक – हूण – दल, पाठान –मोगल एक देहे हो लो लीन ||

संदर्भ :

१. संस्कृति के चार अध्याय – रामधारी सिंह दिनकर, पृ. ३०७
२. वही , पृ. ३०८
३. कबीर ग्रंथावली
४. श्रीरामचरितमानस (उत्तर काण्ड) – तुलसीदास
५. संस्कृति के चार अध्याय – रामधारी सिंह दिनकर,पृ. ६६४
६. वही, पृ. ५०२
७. थियोसोफिकल सोसायटी